

डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति: जयपुर जिले के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) सुन्दरम्*
सुनीता भार्गव**

प्रस्तावना

शिक्षक बच्चों को कुम्हार की भाँति गढ़ता है और वांछित स्वरूप प्रदान करता है। इस गुरुतर दायित्व के निर्वहन के लिए शिक्षकों को बेहतर तरीके से तैयार करना होगा। "शिक्षा बिना बोझ के" यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) ने माना है कि शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन कार्यक्रमों की विषयवस्तु इस प्रकार पुर्ननिर्धारित की जानी चाहिए कि स्कूली शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता बनी रहे। इन कार्यक्रमों में प्रशिक्षुओं में स्व-शिक्षण और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता के विकास पर जोर होना चाहिए।

कोटारी आयोग (64-66) से ही यह बात की जाने लगी थी कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा-2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करे, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे। तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक-शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा-2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है कि सीखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाए।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों, विधियों एवं उपकरणों को उपयोग होता है। यह एक विस्तृत विषय है इसके अन्तर्गत विभिन्न उपकरणों जो कि इलेक्ट्रॉनिकी पर आधारित होते हैं, का उपयोग किया जाता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों व उपकरणों का उपयोग शिक्षा देने में किया जाता है। ये उपकरण हैं - रेडियो, दूरदर्शन, विडियो, टेपरिकार्ड आदि। वर्तमान में शिक्षा देने में जो सबसे महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है वह है डिजिटल सिस्टम। शिक्षा एवं शैक्षिक प्रौद्योगिकी जहाँ आपस में साध्य व साधन का सम्बन्ध रखते हैं वहीं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक है। विज्ञान, जीवन के हर पक्ष के साथ साथ शिक्षा को भी कम लागत में अधिक उत्पादोन्नमुखी बनाने का प्रयास कर रहा है। सभी कार्यों के होने में विज्ञान का योगदान हो रहा है सभी कार्यों में कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अब कम्प्यूटर युक्त डिजिटल कक्षा का प्रयोग किया जाने लगा है।

* शोध निर्देशिका, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान।

** शोधार्थी, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान।

डिजिटल कक्षा की तुलना हम एक अति आज्ञाकारी व अनुशासित व्यक्ति से कर सकते हैं। डिजिटल कक्षा के द्वारा शिक्षा का प्रसार करने में इसे चलाने वाले व्यक्ति को कम्प्यूटर की पूर्ण जानकारी व उसका उपयोग करने का तरीका जानना आवश्यक है। इसके द्वारा अभिवृद्धियों, इच्छाओं एवं सूचनाओं का संकलन करके उनका प्रसार करना महत्वपूर्ण है।

शिक्षकों के लिए उक्त अत्याधुनिक शिक्षण माध्यमों विशेषकर डिजिटल कक्षाका ज्ञान होना आवश्यक है। अतः शोधकर्त्री द्वारा शिक्षकों की डिजिटल कक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन शोध हेतु चुना गया।

शोध का औचित्य

डिजिटल कक्षा हालांकि एक सुलभ और सस्ता साधन नहीं है परन्तु व्यवहारिक ज्ञान को बढ़ाने में यह अति सहायक होता है। डिजिटल कक्षा द्वारा दिए गए शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज डिजिटल कक्षा से शिक्षा, नर्सरी व प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय एवं शोध कार्य करने के स्तरों तक दी जा रही है। इंदिरा गांधी ओपन युनिवर्सिटी एन.सी.ई.आर.टी. व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा तैयार शिक्षा के कार्यक्रम कम्प्यूटर द्वारा निर्मित है। डिजिटल कक्षा द्वारा तैयार शिक्षा के विभिन्न विषयों के कार्यक्रमों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित जानकारी किस सीमा तक उपयोग एवं रुचिकर है। इसके द्वारा विभिन्न विषयों को कितना भार दिया जा सकता है ? अध्यापक इसके माध्यम से छात्र को ज्ञान देने में कहीं तक सफल हुए हैं ? इसका अध्ययन करना आवश्यक है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विभिन्न स्तर पर पढ़ा रहे अध्यापकों की डिजिटल कक्षा द्वारा शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति क्या है ? इसका अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। इसके अध्ययन से जहाँ डिजिटल कक्षा द्वारा शिक्षा प्राप्त करने व देने के मूल्यांकन में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर छात्रों के लिए शिक्षण अधिगम की सरलता का आंकलन भी होगा।

समस्या कथन

समस्या का निर्धारण निम्न कथन के रूप में किया गया:-

डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति: जयपुर जिले के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है-

- डिजिटल कक्षा द्वारा शिक्षा के प्रसार में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
- डिजिटल कक्षा द्वारा शिक्षा के प्रसार में उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
- डिजिटल कक्षा द्वारा शिक्षा के प्रसार में विभिन्न स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ की गई हैं-

- माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा केसन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों तथा माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा केसन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- शहरी क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों तथा माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा केसन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध के प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- शिक्षक
- डिजिटल कक्षा
- शिक्षकों के लिए डिजिटल कक्षा के प्रति अभिवृत्ति

शिक्षक

वर्तमान में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान हो गया है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उस देश के नागरिकों को दी जाने वाली शिक्षा का आलम्बन लेती है वह परजीवी पादपों की भाँति शिक्षा रूपी वृक्ष का सहारा लेकर पनपती और पोषित होती है। अध्यापक उस वृक्ष को सींचने वाला माली हैं। अतः यह अन्तिम सत्य है कि अध्यापक सम्पूर्ण शिक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण एवं केन्द्रीभूत पदस्थापन रखता है। वह राष्ट्र विकास में योगदान प्रदान करने वाली शिक्षा की तैयारी करता है और उसको क्रियान्वित करने में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। वह समाज को तेल के दीपक की भाँति रोशनी प्रदान करता है।

शिक्षक प्राचीन वर्तमान एवं भविष्य में राष्ट्र का निर्माता रहा है, और रहेगा, वह पथ प्रकाशक, निर्माणक संस्कृति वाहक एवं समाज सुधारक है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार :-

“शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मार्गदर्शक हैं। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण करने में धुरी का कार्य करता है। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जन करता, वह बालकों का ही मार्गदर्शक नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।”

डिजिटल कक्षा

डिजिटल कक्षा का सामान्य अर्थ सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के जाल का शिक्षण एवं अधिगम में साभिप्राय प्रयोग से लिया जाता है। डिजिटल कक्षाके लिये अन्य पदों यथा ऑनलाइन लर्निंग, वर्चुअल लर्निंग, वेब बेस्ड लर्निंग आदि का प्रयोग किया जाता है। मूलभूत रूप से ये सभी शैक्षिक प्रक्रिया के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं। इन शैक्षिक प्रक्रियाओं में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग शिक्षण एवं अधिगमन की क्रियाओं में एक समय में या अलग-अलग किया जाता है।

डिजिटल कक्षा शब्द ऑनलाइन लर्निंग, वर्चुअल लर्निंग, डिस्ट्रीब्यूटेड लर्निंग नेटवर्क तथा वेबबेस्ट लर्निंग से भी व्यापक है। डिजिटल कक्षा में “ई” शब्द से आशय इलैक्ट्रॉनिक से होता है। लर्निंग शब्द का अर्थ होता है, सीखना। इस प्रकार डिजिटल कक्षा का सामान्य अर्थ इलैक्ट्रॉनिक की सहायता से सीखना या शिक्षा में नवीन इलैक्ट्रॉनिक तकनीकों का प्रयोग ही डिजिटल कक्षा कहलाता है। इस प्रकार डिजिटल कक्षा में व्यक्तियों एवं समूहों द्वारा की जानेवाली शैक्षिक गतिविधियों को शामिल किया जाता है। ये गतिविधियाँ वद सपदम वत वर्गि सपदम एक समय में अथवा एक साथ या अलग-अलग कम्प्यूटर एवं अन्य इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के द्वारा संपादित की जाती हैं।

शिक्षकों के लिए डिजिटल कक्षा के प्रति अभिवृत्ति

साधारण अभिवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से होता है अर्थात् मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हम कह सकते हैं कि अभिवृत्ति से हमारा आशय उस दृष्टि से है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था, अथवा किसी स्थिति के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के किसी विशेष व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की किसी विषय के प्रति उनकी आन्तरिक भावना या विश्वास होता है। व्यक्ति के विकास के साथ उसके अनुभवों की वृद्धि हुआ करती है। अभिवृत्ति एक विशिष्ट मानसिक दशा होती है। व्यक्ति इसी से कार्य करता है और इसी से नियन्त्रित भी रहता है। अभिवृत्ति द्वारा दी गई प्रेरणा बिलकुल व्यक्ति की इच्छाओं एवं मूल प्रवृत्तियों द्वारा प्रदत्त प्रेरणा के समान होती है। अभिवृत्ति व्यक्ति के अर्जित अनुभवों से संगठित होकर उसे गति प्रदान करती है। अभिवृत्ति का निर्माण प्रत्ययों द्वारा होता है। अभिवृत्ति के निर्माण में ज्ञानात्मक व भावात्मक

आधार होते हैं। अभिवृत्ति का विकास धीरे-धीरे होता है। जब वह मनोवैज्ञानिक क्रिया डिजिटल कक्षा के प्रति शिक्षकों की हो तो इस प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति को हम डिजिटल कक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति कह सकते हैं।

शोध का परिसीमांकन

किसी भी शोध कार्य की गहनता एवं सूक्ष्मता की दृष्टि से शोध कार्य की सीमा निर्धारण करना आवश्यक है ताकि विषय/उद्देश्यों से अन्यत्र न भटक जाए।

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न प्रकार सीमा निर्धारण किया जाएगा –

समयाभाव के कारण वर्तमान शोध प्रबंध को निम्न परिसीमाएं दी गई है –

- प्रस्तावित शोध प्रबंध जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले 100 शिक्षकों पर किया गया।
- प्रस्तावित शोध प्रबंध जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले 100 शिक्षकों पर किया गया।

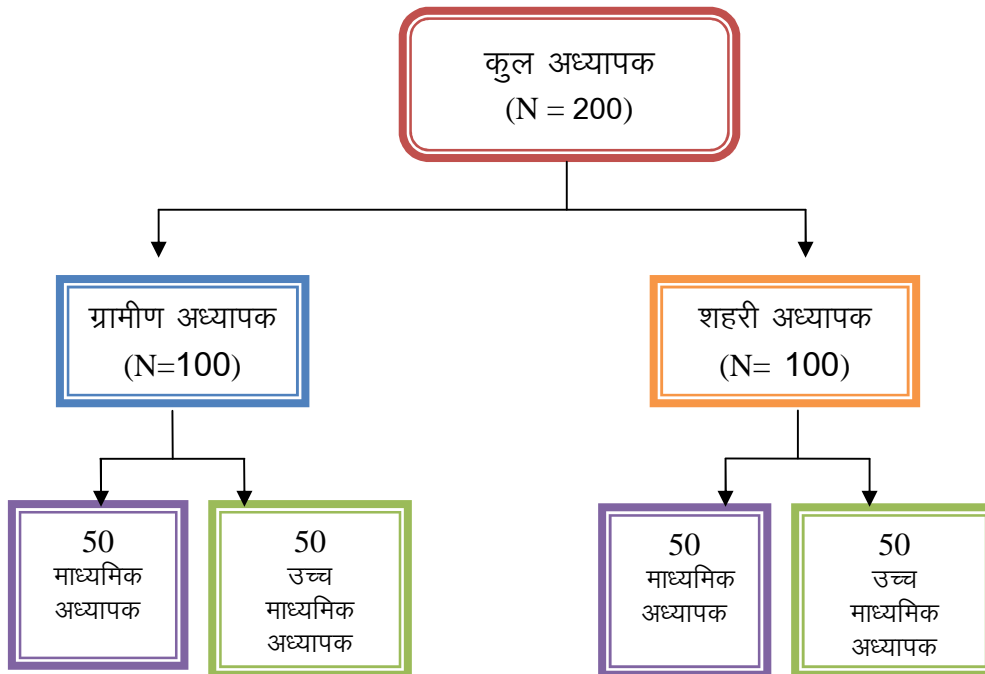
शोध का क्षेत्र.

प्रस्तावित शोध अध्ययन का क्षेत्र जयपुर जिला रखा गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के अन्तर्गत स्थित शिक्षकों की डिजिटल कक्षा के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इसके लिये कुल 200 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। कुल न्यादर्श शिक्षकों का रेखीय चित्रण निम्नानुसार प्रस्तुत किया है–

- प्रस्तावित शोध प्रबंध जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले 100 शिक्षकों पर किया गया।
- प्रस्तावित शोध प्रबंध जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले 100 शिक्षकों पर किया गया।



वर्तमान शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में अध्यापकों में—डिजिटल कक्षा के उपयोग के प्रति स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लिया गया।

सांख्यिकी विधियाँ

वर्तमान शोध कार्य में निम्न सांख्यिकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गई हैं।

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- टी परीक्षण

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के भी कुछ अपने निष्कर्ष है, जो चतुर्थ परिच्छेद में कृत दत्तों के विस्तृत विश्लेषण एवं व्याख्या के परिणाम के रूप में प्राप्त हुए हैं।

- माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों यथा
 - डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान
 - परम्परागत शिक्षण का प्रयोग
 - सॉफ्टवेयर का प्रयोग
 - नेटवर्क का प्रयोग
- में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान एवं परम्परागत शिक्षण का प्रयोग आयाम में अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापिकाओं से कुछ अधिक है।
 - उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों यथा
 - डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान
 - परम्परागत शिक्षण का प्रयोग
 - सॉफ्टवेयर का प्रयोग
 - नेटवर्क का प्रयोग

में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- उच्चमाध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों परम्परागत शिक्षण का प्रयोग, सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान आयाम में अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापिकाओं से कुछ अधिक है।

- ग्रामीण क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों यथा
 - डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान
 - परम्परागत शिक्षण का प्रयोग
 - सॉफ्टवेयर का प्रयोग
 - नेटवर्क का प्रयोग

में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- ग्रामीण क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ में उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान, सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि परम्परागत शिक्षण का प्रयोग आयाम में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों से कुछ अधिक है।
- शहरी क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों यथा
 - डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान
 - परम्परागत शिक्षण का प्रयोग
 - सॉफ्टवेयर का प्रयोग
 - नेटवर्क का प्रयोग

में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- शहरी क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ में उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों परम्परागत शिक्षण का प्रयोग, सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान आयाम में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों से कुछ अधिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिरितोंगवार्न (2006) थाईलैण्ड के विश्वविद्यालयों में Digital Classes का प्रयोग, स्वतंत्र अध्ययन थाईलैण्ड,
2. गे एवं ब्लेडस (2005) प्लू संसाधनों का प्रयोग आर्टिकल Web-based Learning, International Journal of Instructional Media, Vol.31, pp.309-321.
3. लिवा (2004) Instruction for Advanced Knowledge Acquisition in Unstructured Domains; Educational Technology, Vol.3 1, No.5, pp.24-33.
4. स्वामी, गोविन्दा (2002) इलैक्ट्रॉनिकली लर्निंग डिजायन The Internet and Higher Education, Vol.4, pp.287-299
5. स्कूमेचर एवं मोराहन मार्टिन (2001) जेन्डर एवं डिजीटल क्लास Computers in Human Behavior, Vo;.19,No.6,pp.751-765

